Mangaon Taluka Education Society's

Doshi Vakil Arts College and G.C.U.B. Science & Commerce College, Goregaon-Raigad

Affiliated to University of Mumbai | NAAC Reaccredited with B++ (CGPA- 2.85) Grade in 2nd Cycle

Recognized under Sections 2(f) & 12(B) of UGC Act, 1956 | 100% Grant-in-Aid from the Government of Maharashtra

Research Committee Organizes

One Day International Multidisciplinary e-Conference on

Recent Trends in Science, Commerce & Humanities

Certificate of Presentation

This is to Certify that

MISS SNEHAL SHIVAJIRAO INGLE

DOSHI VAKIL ARTS COLLEGE AND G.C.U.B. SCIENCE & COMMERCE COLLEGE, GOREGAO-RAIGAD

has presented a Research Paper in

One Day International Multidisciplinary e-Conference on Recent Trends in Science, Commerce & Humanities, held on Saturday, 16th March 2024 on the topic entitled :

Synthesis and Characterization of Sulphur containing heterocyclic chalcones

We highly appreciate his/her contribution in the e-Conference

Prof (Dr) Janardan S. Hotkar
Principal

Dr. Jagdish B. Thakur
Convenor

Dr. Kanchan G. Mane
Secretary

Rayat Shikshan Sanstha's

Karmaveer Bhaurao Patil Mahavidyalaya, Pandharpur

(Autonomous)

Dist- Solapur (M.S.),India - 413304

NAAC Reaccreditation A+ with CGPA 3.51 UGC CPE status and PARAMARSH Mentor College

Affiliated to Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University,Solapur

Two Day International Conference on

Smart Materials for Sustainable Development, Energy and Environmental Applications(SMSDEEA -2023)

Organized by **Department of Physics, Chemistry & Electronics**

In Collaboration with **IQAC & Student Teacher Research Cell**

Under the Aegis of RUSA Component 8

CERTIFICATE

This is to certify that, Prof. /Dr. / Mr. / Ms. /Mrs. Snehal shivajirao Ingle

of D.B.F. Dayanand college of Arts and Science, Solapur.

has Attended / Presentated Research Paper (Oral / Poster) entitled 2-Amino-3-cyano-4H-benzo chromene derivatives : Potent anticancer agent against human breast cancer

in Two Day International Conference on **'Smart Materials for Sustainable Development, Energy and Environmental Applications' (SMSDEEA-2023)** held on 20 - 21 March 2023. His / Her contribution to the conference is highly appreciated.

Mr. Y. A. Pathak **Organizing Secretary**	**Mr. R. J. Kavade** **Coordinator**	**Mr. A. R. Patil** **Convener**	**Dr. C. J. Khilare** **Director & Principal** **Karmaveer Bhaurao Patil Mahavidyalaya, Pandharpur (Autonomous)**

D.A.V. College Trust and Management Society, New Delhi's

D.A.V. Velankar College of Commerce, Solapur

(Affiliated to Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur)

Interdisciplinary Seminar on

Academic Research Writing

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

This is to certify that

Snehal Shivajirao Ingle

of

D.B.F. Dayanand College of Arts & Science

has actively participated in one day interdisciplinary seminar on **Academic Research Writing** on Sunday 7th May 2023 and presented research paper entitled

"Design, Synthesis & Pharmacological screening of Sulphur containing Heterocyclic compounds."

We appreciate his/her efforts towards research activities and wish him/her best luck for his/her future research work.

Dr. A. H. Bobade
Organising Secretary

Prof. Dr. S. V. Shinde
In-charge Principal

Prof. V. R. Dadge Library Foundation, Latur

in Collaboration with

Shivaji Mahavidyalaya, Udgir (M.S.)

Organized Multidisciplinary National Conference on

Higher Education, Research, Skill Enrichment and Knowledge Transfer in the Digital Era

CERTIFICATE

This is to certify that ***Dr Sachin Ramesh Toradmal*** of ***shikshan Prasarak Mandal, dalit Mitra Kadam Guruji Science College, Mangalwada*** has Participated and Presented a Paper entitled ***Ai Technology In Higher Education and Its Impact on Faculty and Students*** in National Conference held on 1st September 2024.

Dr. V. M. Pawar	Mr. Sagar G. D	Dr. Jagdish Kulkarni	Dr. A. M. Nawale
Organizing Secretary	**Secretary**	**President**	**Principal**
S.M. Udgir	**PVRDL Foundation**	**PVRDL Foundation**	**S. M. Udgir**

फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य

संदर्भ और प्रकृति

संपादक मंडल

डॉ. सतीश यादव
डॉ. संतोष कुलकर्णी
डॉ. रणजीत जाधव
डॉ. हणमंत पवार

Scanned with OKEN Scanner

फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य
संदर्भ और प्रकृति

संपादक मंडल
डॉ. सतीश यादव
डॉ. संतोष कुलकर्णी
डॉ. रणजीत जाधव
डॉ. हणमंत पवार

यश पब्लिकेशंस
नई दिल्ली, भारत

Scanned with OKEN Scanner

10. फणीश्वरनाथ रेणु के मैला आँचल उपन्यास में जनवादी चेतना
प्रो. डॉ. रामकृष्ण बदने

11. मैला आँचल उपन्यास : एक अध्ययन 60
डॉ. रत्नमाता धारबा धुळे

12. 'मैला आँचल': एक समस्या प्रधान उपन्यास 63
डॉ. सादिकअली हबीबसाब शेख

13. 'मैला आँचल' उपन्यास का यथार्थवादी स्वरूप 70
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद

14. फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' उपन्यास में व्यक्त
राजनीतिक स्वर 76
डॉ. शिंदे अनिता मधुकरराव

15. 'मैला आँचल' की प्रासंगिकता 81
आरती कुमारी

16. 'मैला आँचल' में व्यक्त पुरूष चरित्र 87
डॉ. कल्याण शिवाजीराव पाटिल

17. 'मैंला आँचल' उपन्यास के डॉ प्रशांत की प्रासंगिकता 92
डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील

18. मानवीय संवेदना के कुशल चितेरे कथा शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु 97
डॉ. सूर्यकांत शिंदे

19. 'मैला आँचल' में व्यक्त ग्रामजीवन 101
डॉ. श्रीरंग वट्टमवार

20. 'मैला आँचल' में व्यक्त राजनीतिक स्वर 108
डॉ. राम दगडू खलंग्रे

21. मैला आँचल - फणीश्वरनाथ रेणु 116
मंगल संभाजीराव खुपसे

22. 'मैला आँचल' उपन्यास में अभिव्यक्त पुरूष पात्र 122
इम्रान शेख

Scanned with OKEN Scanner

'मैला आँचल' उपन्यास में अभिव्यक्त पुरूष पात्र

इम्रान शेख

हिंदी साहित्य में फणीश्वरनाथ रेणु का स्थान महत्वपूर्ण हैं। फणीश्वरनाथ रेणु ने हिंदी साहित्य में अमूल्य योगदान दिया हैं। आंचलिक उपन्यास कार के रूप में वह लोकप्रिय हुए हैं। उन्होंने 'मैला आँचल', 'परति परिकथा' आदि आंचलिक उपन्यासों का निर्माण किया हैं। मैला आँचल उपन्यास चर्चीत उपन्यास हैं। उपन्यास में कथा को रोचकता, पठणीय बनाने के लिए पात्रो की अहम भूमिका होती हैं। मैला आँचल इस उपन्यास में पात्रो की संख्या लगभग तीन सौ हैं। जो कथा को आगे बढाने काम करते है। उपन्यास मे मुख्य पात्रो का चरित्र चित्रण करने से पहले हम चरित्र चित्रण के तात्पर्य को समझते हैं।

चरित्र चित्रण शब्द से तात्पर्य है कि, उपन्यास में पात्रो को मूर्तिमात्ता और स्वाभाविकता के साथ चित्रित करना। दुसरे शब्दो कहा जाये तो उपन्यास के पात्रों के चरित्र का उदघाटन तथा तर्क संगत विकास चरित्र चित्रण हैं। उपन्यासकार मनुष्य चरित्र का उदघाटन करते समय उसके क्रिया कलाप और व्यवहार को स्पष्ट करता हैं। वह यह भी संकेत करता है कि, युग अथवा समाज की भिन्न भिन्न परिस्थितियॉं किनकिन रूपो में मनुष्य के जीवन को प्रभावित करती हैं। विविध मानवीय गुण या दोष किस प्रकार से निर्मित होते हैं।

"उपन्यासकार कुछ शब्दो में मूर्तिया गढ डालता है, फिर उनके साथ नाम और लिंग जोडता है, उन्हे अनुभव प्रदान करता हैं। उनसे उद्धरण चिन्हों में बातचीत करवाता है, यह शब्द मूर्तिया ही उपन्यास के पात्र है।"[1]

उपन्यासकार प्रेमचंद ने चरित्र चित्रण को अधिक महत्व देते हुए कहा है– "सब आदमियों के चरित्र में बहुत कुछ समानताए होते हुए भी कुछ विभिन्नताए

होती हैं। यही चरित्र संम्बंन्धी समानता और विभिन्नता अभिनत्व में भिन्नत्व और भिन्नत्व में अभिनत्व दिखाना उपन्यास का मुख्य कर्तव्य हैं।"[2]

मैला आँचल उपन्यास में अभिव्यक्त पुरूष चरित्र

मैला आँचल उपन्यास में डॉ. प्रशांत, बलदेव, कालीचरन, बावणदास, विश्वनाथ प्रसाद, रामकृपाल सिंह, खेलावन सिंह यादव, हरगौरी, जोतिखोजी आदि पुरूष पात्र दिखाई देते हैं। यह पुरूष पात्र कथानक में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन में से डॉ. प्रशांत, बावनदास, और बलदेव इन पुरूष पात्रो का चरित्र चित्रण निम्नवत हैं।

डॉ. प्रशांत उपन्यास का मुख्य पुरुष पात्र हैं। उसके पारिवारिक जीवन का कुछ पता नहीं प्रशांत की माँ ने बचपन में ही एक मीट्टी के हाँडी में उसे डालकर एक नदी में छोड दिया था। उसे आश्रम के संस्थापक प्रसिद्ध नेपालवासी राष्ट्रभक्त उपाध्याय परिवार नें आश्रम लाया था, वहॉ उसका लालन पालन पति परित्यक्ता स्नेहमयी बॅनर्जी नें किया। उपाध्याय परिवार में प्रशांत बडा हुऑ। "हिंदु विश्वविद्यालय में आई. एस. सी. पास होने के बाद वह पटना के मेडिकल कॉलेज में दाखिल हुआ। माँ की इच्छा थी की वह डॉक्टर बने। लेकिन अपने बेटे प्रशांत को वो डॉक्टर होते देख नही पाई। काशीवास करते करते काशी की किसी गली में वह हमेशा के लिए खो गई।"[3]

डॉक्टरी की परीक्षा पास करने के बाद प्रशांत हाऊस सर्जन का काम कर रहा था। उस समय 1942 का आंदोलन शुरू हुआ था। प्रशांत और उपाध्याय परिवार आंदोलन कारीयों की सहायता और आंदोलन का संचालन करने के आरोप में गिरफ्तार होते हैं। 1946 में बिहार मे कॉग्रेस की सरकार के मंत्रिमंडल का गठन हुआ तभ वह विदेश जाने की स्कॉलरशिप को त्याग देता है। पूर्णिया के छोटेसे गाँव मे मलेरिया और काला-बाजार पर शोध कार्य करने का मन बना लेता हैं।

डॉ. प्रशांत का 1942 के आंदोलन में भाग लेना, स्कॉलरशिप को त्याग कर एक पिछडे देहात में मलेरिया सेंटर पर शोध कार्य करने का निर्णय उसे एक राष्ट्रप्रेमी, आदर्शवादी, पात्र की कोटी में खडा करता हैं। गाँव में आने पर वह कथा के अंत तक एक आदर्श डॉक्टर के रूप में उभरता हैं।

शोध कार्य करने के लिए डॉ. प्रशांत संथालो से चुहे, खरगोश तथा सियार आदि खरीदता हैं। इस संदर्भ में उसकी इमानदारी के दर्शन होते हैं। उसे एक

Scanned with OKEN Scanner

साधारण जीवन जीना अच्छा लगता था। जोगिया माँझी नामक पात्र प्रशांत के बारे में कहता है-- "डॉक्टरने खरगोश का दाम दिया पचास रूपया। बारह रूपये दर्जन चूहा। ---- दो सियार के बच्चों का दाम पचास रूपया। दे सकता है कोई बडा आदमी इतना दाम ...? सरकारी आदमी हैं, मगर घुसखोर नही...।"[4] जोगिया का यह कथन यह स्पष्ट करता हैं कि, प्रशांत एक इमानदार हैं, वह शोषक नही हैं। गरीब, पिछडे हुए लोगों के प्रति उसके मन में सहानुभूति हैं।

गरीब लोगो के प्रती डॉ. प्रशांत हमेशा तत्पर रहता हैं। उनकी दयनीय परिथिती से वह दुखी होता हैं और निराश होकर सोचता हैं - "क्या होंगा वह संजीवनी बूटी खोजकर? उसे नही चाहिए संजीवनी। भूख और बेबसी में छटपटाकर मरने से अच्छा मैलेग्नेट मलेरिया से बेहोश होकर मर जाना।"[5] इस बात से पता चलता है कि, डॉ. प्रशांत एक आदर्श पात्र के रूप में पाठकों के सामने चित्रित हुआ हैं। - वह अपने काम के प्रति दायित्व रखता हैं।

अंत में डॉ. प्रशांत कमली के पुत्र को गोद लेता हैं। उसे बचपन में जो प्यार नही मिला वह उस बच्चे को देता हैं। वह उपन्यास के अंत तक अपनी निष्ठा को उजागर करता रहता है और गरीब लोगों की सेवा करता रहता हैं।

'मैला आँचल' उपन्यास में दुसरा महत्वपूर्ण पात्र हैं बावनदास। वह सामान्य व्यक्ति न होकर शरीर से वौना हैं। लेकिन उसकी चारित्रिक ऊँचाई तक उपन्यास का कोई भी पात्र नहीं पहुँच सका हैं। बावनदास महात्मा गांधी के कहने पर सन 1930 काँग्रेस का वालण्टियर बना। वह महात्मा गांधी और उनके काँग्रेस पर पूर्ण आस्था रखता है। तन-मन-कर्म से गांधीजी और उनके सिद्धांतो को समर्पित हैं। सामान्य कार्यकर्ता के रूप में काम करते हुए 'मुठिया' की वसुली से आए रूपये से जलेबी खानेपर वह दुखी होता हैं। उसे इस बात पर इतना पछतावा होता हैं कि, अगले दो दीन अनशन करता हैं। उसे अनुभव होता है की गरीबो द्वारा दिए गए रूपयों का उसने दुरूपयोग किया हैं।

मेरीगंज में बावनदास काँग्रेस संघटन के लिए अपने सहकारी बलदेव की सहायता करने के लिए आता हैं। उसकी कॉग्रेस निष्ठा किसी व्यक्ति तक सिमित न रहकर उनके सिद्धांतों तक संचारित होती हैं। आजादी के पूर्व और आजादी के बाद सत्ता के लिए काँग्रेस में घुसने वाले स्वार्थी लोगो को पहचानता हैं लेकिन कुछ कर नहीं पाता। सत्ता पाने के लिए जाति के आड में राजनिति करने वालो से वह दुःखी हैं-- "यह पटनीय रोग हैं। अब तो और धूम-धाम से फैलेंगा। भूमिहार, राजपूत, कैथ, यादव, हरिजन सब लढ रहे हैं। किस का आदमी जादे

चुना जायें इसि की लडाई हैं।"[6]

पार्टी कार्यकर्ता, नेताओं का गाव छोडकर शहर जाने तथा वहा बसने और स्थानिय नेताओं कि कालीकरतुतो से वह व्यथित होता हैं। उसकी यह चिंता उसके एक निष्ठावंत कार्यकर्ता होने का प्रमाण हैं। "संसाक जी, परांती समापति हो गये हैं, वह भी पटना में ही रहेंगे। मेले (एम.एल.ए.) लोग तो हमेशा वहीं रहते हैं। सुराज मिल गया, अब क्या हैं ....। छोटन बाबू का राज हैं। एक कोरी (20 का समूह) बेमान बिलेक मारकेटी के साथ कचेहरी में घूमते रहते हैं।"[7] आजादी के साथ हुए देश विभाजन से बावनदास का दिल तुट जाता है वह निराश हो जाता हैं। गांधीजी के पत्रो का बंडल बलदेव को सौंपकर वह चला जाता हैं। इस तरह एक यहा एक निष्ठावंत कार्यकर्ता का परिचय मिलता हैं जो अन्याय, अनिष्ठ कार्य करनेवालों का विरोध कर एक अच्छे कार्यकर्ता होने का संदेश देता हैं।

उपन्यास का तिसरा मुख्य पात्र बलदेव हैं। वह एक काँग्रेस कार्यकर्ता हैं जिसने मेंरीगंज में जयहिंन्द का नारा दिया था। बलदेव के पिता की बचपन में मृत्यू हो जाती हैं वह मूलतः चन्नन पट्टी का रहनेवाला हैं। अब वह मेरीगंज में अपनी विधवा मौसी के साथ रहने लगा था। पिता की मृत्यू के बाद बलदेव एक किसान अजोधी भगत की भैंस चराने का काम करता था। चन्नन पट्टी में कॉंग्रेस सभा होने के बाद काँग्रेस का वालिण्टियर बनाया गया।

बलदेव ने स्वाधीनता आंदोलन में भी अपना योगदान दिया हैं। आंदोलन में उसने शारीरिक यातनाए और जेल भी भोगी हैं। बलदेव गांधीजी के सत्य अहिंसा के सिद्धांतों को मानता हैं और उसे अपनी समझ के अनुसार गृहण करता है, पालन करता हैं। बलदेव सबकी इज्जत करता हैं। विनम्रता उसका एक विशेष गुण हैं। जब हरगौरी उसका अपमान करता है तब बलदेव शांत रहता हैं।

मठ के महन्त बलदेव को भंण्डारे की व्यवस्था सौंपते है इस प्रसंग में उसके चरित्र की सादगी, कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी दिखाई देती हैं, महन्त सेवादास किसी पर विश्वास नहीं करनेवाले बलदेव पर भण्डारे की व्यवस्था का काम सौंप देते हैं। इस तरह से बलदेव के व्यक्तित्व की अनेक छटाए उपन्यास में चित्रित हुई हैं। वह बाहर से जितना भोला-भाला, सीधा-साधा दिखाई देता है उतना वास्तव में नही हैं। संदेह, इर्षूया उसके व्यक्तित्व को उजागर करते हैं। उसका पवित्रतावादी आचरण कही उसका ढोंग तो नही हैं ? इस तरह उपन्यास कार ने बलदेव का चरित्र चित्रण किया हैं।

अंत में हम हक सकते है मैला आँचल उपन्यास मे चित्रित पुरुष पात्र अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिसके कारण उपन्यास पाठकों कों आगे और आकर्षित करता हैं। डॉ. प्रशांत, बावनदास, बलदेव के साथ ऐसे अन्य पुरुष पात्र है जो उपन्यास में जान दाल देते हैं। मैला आँचल उपन्यासकार सचमुच ही उच्च कोटी का उपन्यास है। और फणीश्वरनाथ रेणु सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यासकार हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में पुरूष चरित्र - डॉ. हेमलता कांचनकर, पृष्ठ 117
2. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन - अशोक धुलधुले पृष्ठ 20
3. मैला आँचल फणीश्वरनाथ रेणु - पृष्ठ 46
4. वही, पृष्ठ 171
5. वही, पृष्ठ 158
6. वही, पृष्ठ 208
7. वही, पृष्ठ 208

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय भाषा और साहित्य का अनुबंध

संपादक
डॉ. सतीश यादव
डॉ. संतोष कुलकर्णी

परिदृश्य प्रकाशन
मुम्बई

25. 'साये में धूप' और 'एल्गार' में व्यक्त सामाजिक चिंतन का अनुबंध 176
–प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण

26. मराठी भाषी साहित्यकारों का हिंदी को योगदान 184
–डॉ. इम्रान शेख

27. हिंदी-मराठी संत साहित्य : अनुबंधात्मक तथ्य 189
–प्रा. डॉ. सादिकअली हबीबसाब शेख

28. संत जनाबाई और हिंदी की संत मीराबाई के काव्य में भक्ति का अनुबंध 195
– डॉ. विजय शिवराम पवार

29. महाराष्ट्र के हिंदू-मुस्लिम संतों के काव्य में सामाजिक सरोकार का अनुबंध 201
– डॉ. अर्चना पत्की

30. हिंदी-मराठी का अंतःसंबंध 207
–प्रा. डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील

31. मराठी भाषी संतों का हिंदी के विकास में योगदान 215
–डॉ. जाधव ज्ञानेश्वर भाऊसाहेब

32. संत कबीर और संत तुकाराम के साहित्य में अनुंबंधात्मक तथ्य 222
–सागर गणपत यादव

33. हिंदी-मराठी वैष्णव साहित्य : एक अनुबंध 227
–डॉ. अवधेश कुमार मेहता

34. संत कबीर और संत तुकाराम के काव्य में सामाजिक चिंतन 234
–प्रा. डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी

35. कबीर और तिरुवल्लूवर के काव्य में सामाजिक अभिव्यक्ति 242
–डॉ. बबन संभाजीराव बोडके

36. संत कबीर और संत तुकाराम के काव्य में जीवनमूल्य 247
–प्रा. डॉ. पठाण अयुबखान गुलाबखान

International Virtual Conference

on

Recent Trends in Animal Sciences

March 25th - 27th, 2022

Organized by: Ecophysiology Thrust Area, Centre of Advanced Study,
Department of Zoology, Institute of Science, Banaras Hindu University,
Varanasi - 221005, India

Certificate

This is to certify that **Dr. S.V Jadhav** participated in the conference as an oral presenter under the theme of **Fish Biology**.

The title of her presentation was **"A study on Oxygen Consumption in a Freshwater Fish *Clarias batrachus* exposed to pesticide Ethion"**.

Prof. M. Singaravel
Convener

Prof. S. Mittal
Organizing Secretary